

ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 29

2016

**JOURNAL
OF THE
MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD**



EDITORS

S.D. Guru

Dr. R.K. Sharma

Dr. Suresh Mishra

MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD

(Regd. No. 52/3-3-1958)

Executive Board (2013-2016)

Chairman	Dr. M.S. Ranavat
Vice-Chairman	Dr. M.D. Mishra
Secretary	Dr. Naveen Gideon
Joint Secretaries	Dr. Vandana Gupta Dr. Ram Kumar Ahirwar
Treasurer	Dr. B.K. Shrivastava
Editors	S.D. Guru Dr. R.K. Sharma Dr. Suresh Mishra

Executive Members

1. Dr. Kapildev Mishra
2. Dr. S.K. Dwivedi
3. Dr. J. C. Upadhyay
4. Dr. R.N. Shrivastava
5. Dr. Meena Shrivastava
6. Dr. Anil Dubey

Dr. Naveen Gideon

Secretary

Madhya Pradesh Itihas Parishad

Opp. Police Station, Near Lal School, Gopalganj, Sagar (M.P.) Pin - 470001

Cell - 9425020650, E-Mail : naveen11562@gmail.com

32	गांधी जी की नारियों के प्रति अवधारणा डॉ. सुधा सोनी	134
33	सविनय अवज्ञा आन्दोलन में छत्तीसगढ़ अंचल के स्त्रियों की भूमिका — एक अध्ययन डॉ. सीमा पाण्डेय	138
34	गुप्त एवं गुप्तोत्तर कालीन सागर का इतिहास डॉ. बी.के. श्रीवास्तव	141
35	ग्वालियर का एक नायाब नक्षत्र : संगीत सम्राट तानसेन डॉ. मीना श्रीवास्तव	146
36	सातवीं सदी में उत्तर भारत के लघु राज्य डॉ. अनिल दुबे	150
37	दूल्हादेव उर्फ हरदौल अथवा शिव एक अध्ययन डॉ. वन्दना गुप्ता	155
38	बाजीराव (प्रथम) के राज्य की भौगोलिक स्थिति डॉ. विभा राठौड़	158
39	महान भूमकाल विद्रोह में गुण्डाधुर का योगदान डॉ. पंकज सिंह	162
40	Slaves and their Rights in Ancient India Dr. Sanjay Barolia	167
41	नक्सलवाद की उत्पत्ति और विकास : एक ऐतिहासिक स्मरण डॉ. सीमा झेरवार	171
42	गुर्जर प्रतिहार राजवंशों के चम्बल क्षेत्र के सामन्त डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ	175
43	मध्यप्रदेश के बौद्ध कला मण्डप — भरहुत एवं सांची डॉ. कुमकुम माथुर	182
44	बौद्ध-संस्कृत साहित्य में स्त्रियों की दशा (ललितविस्तार के संदर्भ में) डॉ. आर. पी. सिंह	188
45	हरीसिंह गौर पुरातात्विक संग्रहालय सागर की कलावेरा प्रतिमाएँ डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव	193

महान भूमकाल विद्रोह में गुण्डाधुर का योगदान

डॉ. पंकज सिंह
सहायक प्राध्यापक-इतिहास
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

बस्तर का आदिवासी बहुल आरण्यक अंचल अपने सघन श्यामल वनों, ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं तथा विशिष्ट आदिम संस्कृति के लिए सदैव आकर्षण का केंद्र रहा है। आधुनिक छत्तीसगढ़ के दक्षिण में स्थित बस्तर का जनजातीय प्रवाह भारतीय इतिहास के संदर्भ में उस अंतः सलिला नदी के जल प्रवाह की भाँति है जो ऊपर से भले ही दिखाई न दे, किंतु जिसका भूमिगत अस्तित्व प्रच्छन्न होते हुए भी प्रभावी रहता है। अपनी गहन रहस्यमयता, दुर्गमता तथा आदिम विशेषताओं को समेटे बस्तर का वनांचल अपनी पुरातन सांस्कृतिक, ऐतिहासिक गरिमा के लिए भी इतिहासकारों का रुचि का विषय रहा है।

बस्तर छत्तीसगढ़ के दक्षिण में स्थित है। इसके पूर्व में उड़ीसा, दक्षिण में आंध्रप्रदेश तथा दक्षिण-पश्चिम में महाराष्ट्र राज्य की सीमाएं मिलती हैं। 1910 में बस्तर रियासत की स्थिति 17°48 से 20°14 उत्तरी अक्षांश और 80°13 से 82°1 पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। 1910 में इस रियासत की जनसंख्या 3,06,544 थी बस्तर मूलतः एक आदिवासी अंचल है। इसका मूल आदिवासी क्षेत्र का 8 प्रतिशत भाग वनांचलों एवं पहाड़ियों से आच्छादित है प्रकृति की विशाल सम्पत्ति के स्वामी होने के बावजूद बस्तर के आदिवासी आज भी निरक्षर तथा निर्वसन का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

तथाकथित सभ्य परदेसी आदिवासी जन जब-जब मिला तब-तब वह अनिवार्य रूप से शोषित हुआ सामान्त, राजा, जमींदार जागीदार, अधिकारी वर्ग, व्यापारी, व्यवसायी, साहूकार, महाजन अथवा राजनेता समय समय पर आदिवासियों को घुन के समान चाटते रहे। पिछले 200 वर्षों से ये आदिवासी निरंतर इन शोषणों के विरुद्ध बगावत करते आ रहे थे। इन समूचे विद्रोह में सर्वाधिक महत्वपूर्ण विद्रोह सन् 1910 का बस्तर विद्रोह था। जिसे महान भूमकाल विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है।

आदिवासियों ने आरोपित परिवर्तन का सदैव विरोध किया है। 1910 में होने वाले बस्तर विद्रोह के पीछे भी बहुत से ऐसे कारण हैं जिसने आदिवासियों का आंदोलन करने के लिए उद्बलित किया। 1910 के विद्रोह का लक्ष्य था, ब्रिटिश राज्य को समाप्त कर बस्तर में मुरिया राज की स्थापना करना। 1910 के विद्रोह के कारणों को निम्नलिखित बिंदुओं में उल्लिखित कर सकते हैं।

(अ) बस्तर के शासन की अब यह विशेषता रही कि यहाँ जो दीवान होते थे वे राजवंश के व्यक्ति हुआ करते थे। लेकिन जब यहाँ अंग्रेजी शासन का दबदबा हो गया तो अंग्रेजों के प्रतिनिधि यहाँ प्रशासक या अधीक्षक होकर